॥ ओ३म् ॥

कुरान में परस्पर विरोधी स्थल

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक 5329
दयानन्द महिला म

लेखक
आचार्य डा० श्रीराम आर्य

प्रकाशक—
अमर स्वामी प्रकाशन विभाग
1058 विवेकानन्द नगर गाजियाबाद (उ० प्र०)

तीसरा संस्करण सन् 1991 ई०] [मूल्य : पचास पैसे मात्र

कुरान में परस्पर विरोधी चन्द स्थल

(1) पक्ष—"नेकी और बदी बराबर नहीं। बुराई का बदला अच्छे बर्ताव से दें" ।34। कु० सूरे हामीम सज्दह ॥

विरोध—ऐ ईमान वालो ! जो लोग मारे जावें उनमें तुमको जान के बदले जान का हुक्म दिया जाता है, आजाद के बदले आजाद-गुलाम के बदले गुलाम, औरत के बदले औरत का।"
कु० सू० बकर रुक आ० 178

"जो मनुष्य अल्लाह का दुश्मन हो और उसके फरिश्तों का और उसके रसूलों का और जिब्रील का और मीकाएल का तो अल्लाह भी ऐसे काफिरों का दुश्मन है" ॥कु० सू० रेबकर रुकू 12 आ० 98 ॥

"और हमने इनके आपस में दुश्मनी और ईर्षा कयामत तक डाल दी है···।" ॥कु० सूरे मायदा 64 ॥

"अल्लाह काफिरों को नसीहत नहीं दिया करता" ।कु० सू० बकर आ० 264।

"अगर सख्ती भी करो तो वैसी ही करो जैसी तुम्हारे साथ की गई हो।" सू० नहल 126।

"मुसलमानो अपने आस पास के काफिरों से लड़ो और चाहिए कि वह तुमसे सख्ती मालूम करें।" कु० सूरे तौबा आ० 124। (2)

पक्ष—"वही (खुदा) आदि है, वही अन्त है, वही प्रत्यक्ष और गुप्त है और वह हर चीज से जानकार है।" कु० सूरे हदीद आ०3।

"तुमको मालूम रहे कि जो कुछ आसमानों और जो कुछ जमीन में है अल्लाह जानता है और अल्लाह हर चीज से जानकार है।" 97कु०सूरे मायदा रु० 13।

विरोध—"उस दिन (खुदा) दोजख से पूछेंगे कि क्या तू भर चुकी और वह कहेगी क्या कुछ और भी है।" कु० सूरे काफ आ० 29।

"उसी ने जमीन और आसमान दोनों से कहा कि तुम दोनों खुशी से आए या लाचारी से ? दोनों ने कहा हम खुशी से आये।" कु०हामीम सज्दह 11।

(3) पक्ष—फिर जब नर सिंहा फूंका जायेगा तो उस दिन लोगों में रिश्तेदारियां (बाकी) न रहेंगी और न एक दूसरे की बात पूछेंगे।

विरोध—(बहिश्त में) हमेशा रहने को बाग हैं जिनमें वे जायेंगे और उनके बड़ों और उनकी बीबियों और उनके बच्चे औलाद जो भला काम करने वाले होंगे और उनके साथ जायेंगे। 23। कु० सू० राद23।

प्रश्न—यदि मुसलमानों के बीबी बच्चे उनके साथ बहिशत में जायेंगे तो काफिरों के भी बीबी बच्चे दोजख में उनके साथ जायेंगे। रिश्तेदारियाँ तो फिर भी कायम रहेंगी। इससे कुरान का दावा तो गलत हो गया।

(4) पक्ष—'तुम्हारा परवर्दिगार बड़ा माफी करने वाला मैहरबान है। अगर उनके काम के बदले में इनको पकड़ना चाहता तो फौरन ही इन पर सजा उतार देता लेकिन इनके लिए एक म्याद है जिससे इधर-उधर कहीं शरण नहीं पा सकते।कु० सूरे कहफ आ० 48।

'खुदा का हर वायदा लिखा हुआ है' कु० सूरे राद आ० 38।

विरोध—कोई शख्स बे हुक्म खुदा मर नहीं सकता। जिंदगी लिखी हुई है और जो शख्श दुनिया में बदला चाहता है हम उसका बदला यहीं देते हैं और जो कयामत में बदला चाहता है मैं उसको वहीं दूंगा। और जो···लोग शक करते हैं मैं उनको जल्द बदला दूंगा। कु० सूरे आल इमरान आ० 146।

(इसमें खुदा की मर्जी पर नहीं वरन लोगों की मर्जी पर निर्भर है कि वे कर्मफल कब और कहां चाहते हैं। प्रथम आयत से विरोध स्पष्ट है।)

(5) पक्ष—"खुदा फिसाद नहीं चाहता।" कु० सूरे बकर आ० 205।

विरोध—(खुदा ने कहा) हमने हर बस्ती में बड़े-बड़े अपराधी पैदा किये ताकि वहां फिसाद करते रहें। कु० सूरे अनआम आ० 123।

(6) पक्ष—(खुदा ने कहा) मेरे यहां बात नहीं बदली जाती और मैं बन्दों पर जुल्म नहीं करता। कु० सूकाफ आ०28।

विरोध—हम कोई आयत मंसूख कर दें या बुद्धि से उतार दें तो उससे अच्छी या वैसी ही पहुंचा देते हैं। कु० सूरे बकर आ० 106।

"जब हम एक आयत को बदल कर उसकी जगह दूसरी आयत उतारते हैं तो जो हुक्म उतरता है उसको वही बखूबी जानता है।" कु० सू० नहल आ० 101।

(7) ऐ पैगम्बर! मुसलमानों को लड़ने पर उत्तेजित करो कि यदि तुम में से जमे रहने वाले बीस भी होंगे तो दो सौ पर ज्यादा ताकतवर बैठेंगे, और अगर तुम में से सौ होंगे तो हजार काफिरों पर ज्यादा ताकतवर बैठेंगे, क्योंकि यह ऐसे लोग हैं जो समझते ही नहीं। 65 कु० सू० अनफाल।

विरोध—"और अब खुदा ने तुम पर से अपने हुक्म का बोझ हल्का कर दिया और उसने देखा कि तुममें कमजोरी हैं, तो अगर तुममें से जमे रहने वाले सौ होंगे तो खुदा के हुक्म से वह दो सौ पर ज्यादा ताकतवर रहेंगे और अगर तुममें से हजार होंगे खुदा के हुक्म से दो हजार पर ज्यादा ताकतवर बैठेंगे। अल्लाह उन लोगों का साथी है जो जमे रहते हैं।" ॥कु० सू० अनफाल आ० 66॥

(8) पक्ष—"ईमान वालों से कहो कि अपनी आंख नीची रखें और अपनी शर्मगाहों को बुरे कामों से बचाये रहें। इसमें उनकी ज्यादा सफाई है··· ।" ॥कु० सूरे नूर आ० 30॥

जिन लोगों का विवाह नहीं हुआ वे अपने को थामे रहें। कु०सूरे० नूर आ० 33।

विरोध—और तुम्हारी लोंड़ियां जो पाक रहना चाहती है उनको दुनिया की जिंदगी के फायदे की गरज से हरामकारी पर मजबूर न करो। और जो मजबूर करेगा तो अल्लाह उनको मजबूर किये पीछे क्षमा करने वाला मेहरबान है।सू० नूर 33।

"जो औरतें कैद होकर तुम्हारे हाथ लगी हों उनके लिए तुमको खुदा का हुक्म है और इनके अलावा दूसरी सब औरतें हलाल हैं।" सू० निसा० आ० 24।

"बीबियों और बांदियों से (जिना करने पर) इल्जाम नहीं।" कु०सू० मौमिनून आ० 6।

(9) पक्ष—"और खजूर और अंगूर के फलों से तुम शेर से अच्छी रोजी बनाते हो। जो बुद्धि रखते हैं उनके लिए और इन चीजों में निशान हैं।" ।कु० सूरे नहल आ० 67।

विरोध—"मुसलमानो ! शराब, जुआ-बुत और पदे गनांब काम हैं। उनसे बचो, शायद इससे तुम्हारा भला हो।" कु० सू० मायदा आ० 90।

(10) पक्ष—"अल्लाह को पसन्द नहीं कि कोई मुंह फोड़कर बुरा कहे गाली दे। मगर जिस पर जुल्म हुआ हो और अल्लाह सुनता और जानता है।" ।148 कु०सू० निसा।

विरोध—ऐ पैगम्बर ! किताब वाले और जाहिलों से कहो कि तुम भी इस्लाम को मानते हो (या नहीं)। कु० सू० आल इमरान आ० 20।

(11) पक्ष—यह वह वक्त था जब तुम अपने परवर्दिगार के आगे विनती करते थे जो उसने तुम्हारी सुन ली कि हम लगातार हजार फरिश्तों से तुम्हारी सहायता करेंगे ।9। यह वह वक्त था कि तुम्हारा परवर्दिगार फरिश्तों को आज्ञा दे रहा था कि हम तुम्हारे साथ हैं, तुम मुसलमानों को जमाये रखो, हम जल्द काफिरों के दिलों में डर डाल

देंगे। बस तुम इनकी गरदन मारो और इनके टुकड़े कर डालो।12 कु० सू० अनकाल।

विरोध—मक्का वाले कहते हैं कि ऐ शख्स (मुहम्मद) तुझ पर कुरान उतरा है, तू पागल है। अगर तू सच्चा है तो फरिश्तों को हमारे सामने क्यों नहीं बुलाता है सो हम फरिश्तों को नहीं उतारा करते हैं···। (6-8)। कु० सू० हिज।

(12) **पक्ष**—और अगर वह जो (कुरान) हमने अपने बन्दे पर उतारा है अगर तुझको इसमें शक हो तो तुम उसके समान एक सूरत बना लाओ और सच्चे हो तो अल्लाह के सिवाय अपने हिमायतीयों को बुला लो।' कु० सू० बकर आ० 23।

विरोध—ऐ पैगम्बर ! क्या काफिर कहते हैं कि इसने कुरान को अपने दिल से बना लिया है तो इनसे कह दो कि अगर तुम सच्चे हो तो तुम भी इसी तरह की बनाई हुई दस सूरत ले आओ और खुदा के सिवाय जिसको तुमसे बुलाते बन पड़े, बुला लो, अगर तुम सच्चे हो।' ।13 सू० हद।

(13) **पक्ष**—'और हमने आसमानों को अपने बाहुबल से बनाया और हम सामर्थ वाले हैं। कु० सू० जारियात।47।

'तुम्हारा परवर्दिगार वही अल्लाह है जिसने छः दिन में जमीन और आसमान को पैदा किया फिर (अपने) तख्त पर जा बैठा'। कु० सू० आराफ आ० 54।

(इसमें जमीन व आसमान को खुदा द्वारा पैदा किया जाना बताया है अर्थात् वे पहिले से न थे)

विरोध—खुदा ने जमीन और आसमान दोनों से कहा (पूछा) कि तुम दोनों खुशी से आये या लाचारी से ? दोनों ने कहा कि हम खुशी से आये।11। सू०हामीम सज्दह।

(इससे स्पष्ट है कि दोनों पहले से मौजूद थे और खुदा के बुलाने पर चले आये। खुदा ने उनको बनाया नहीं था। परस्पर विरोध स्पष्ट है।

(14) **पक्ष**—"लोगो ! तुम्हारा एक खुदा है सो जो लोग पिछली

जिंदगी का विश्वास नहीं करते उनके दिल इन्कारी हैं और वे घमंडी हैं।" कु० सू० नहल आ० 22।

(इसमें मौजूदा जीवन से पूर्व और जिंदगी का उल्लेख है)

विरोध—(लोगों को समझाओ कि तुम मुल्क में चलो फिरो और देखो कि खुदा ने तुमको किस तरह पहली मर्तवा पैदा किया। फिर खुदा आखिरी बार भी (कयामत के दिन) उठावेगा।कु० सू० अनकबूत् आ० 20।

(इससे मनुष्यों के प्रथम बार ही वर्तमान जीवन में पैदा होने की बात कही है)।

(15)पक्ष—"जब हम किसी चीज को चाहते हैं तो हमारा कहना उसके बारे में सिर्फ इतना ही होता है कि हम फर्मा देते हैं कि 'हो' और वह हो जाता है।" ।कु० सू० नहल आ० 40।

विरोध—'खुदा ने जमीन आसमान और जो कुछ उनके बीच में है सभी कुछ आठ दिन में पैदा किया।(कु० सू०हामीम सज्दह आ०9 से 12 तक का भावार्थ)

'वही है जिसने आसमान और जमीन को छः दिन में बनाया और उसका तख्त पानी पर था ताकि तुम लोगों को जांचे कि तुममें किसके कर्म अच्छे हैं···।' (कु० सू० हूद आ० 7)

(16) पक्ष—यह किताब कुरान इस किस्म का नहीं कि खुदा के सिवाय और कोई इसे अपनी तरफ से बना लावे।कु० सू० यूनिस आ० 37।

विरोध—'खुदा के सिवाय किसी की पूजा मत करो, मैं उसी की ओर से तुमको डराता हूं।" ।कु० सू० हूद आ०2।

'खुदा इनको गारत करे, किधर को भटके चले जा रहे हैं।' कु०सू० तौबा आ० 30।

खुदा की कसम, तुमसे पहले हमने बहुत सी उम्मतों की तरफ पैगम्बर भेजे।सू० हल० 63 न।

(इनमें खुदा की ओर से डराने वाला, खुदा से गारत करने की प्रार्थना करने वाला, पैगम्बर भेजने वाला व्यक्ति कुरान का लेखक खुदा

गुरु विरजानन्द दण्ड
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण कमांक 5329
दयानन्द महिला म

से प्रथक अन्य है, यह स्पष्ट है।)

(17) **पक्ष**—'फिर हम जिन्नों और आदम के बेटों (आदमियों) दोनों से मुखातिब होकर पूछेंगे कि तुम्हारे पास तुम्हीं में के पैगम्बर नहीं आये कि तुमसे हमारा हुक्म बयान करे और इस रोज (कयामत) के आने से डरावें। कु० सु० अनआन रुकु 16 आ० 130।

'फिर उस दिन (कयामत के दिन) नियामतों के विषय में तुमसे पूछताछ अवश्य होगी'।कु० सू० तकासुर आ० 8।

विरोध—'उस दिन आदमियों और जिन्नों से पूछताछ उनके गुनाहों के बारे में नहीं होगी'।कु० सू० रहमान 39।

(18) **पक्ष**—'खुदा काफिरों को उपदेश नहीं दिया करता'।कु० सू० तौबा आ० 37।

विरोध—'काफिरों ने अपने पैगम्बरों से कहा कि हम तुमको अपने देश से निकाल देंगे फिर तुम हमारे मजहब में आ जाओ।'।13। कु० सू० इब्राहीम।

(19) **पक्ष**—(खुदा ने कहा) खुदा के सिवाय किसी की पूजा मत करो, मैं उसकी ओर से तुमको डराता और खुशखबरी सुनाता हूं।' (कु० सू० हूद आ० 2)

विरोध—(खुदा ने कहा) और हमने फरिश्तों से कहा कि आदम के आगे सिजदा (दण्डवत प्रणाम) करो तो सबने सिजदा किया मगर इब्लीस (शैतान) ने नहीं किया।' (कु० सू० ताहा आ० 116)

नोट—श्री आचार्य डा० श्रीराम आर्य जी का समस्त साहित्य अब "अमर स्वामी प्रकाशन विभाग गाजियाबाद से प्रकाशित किया जायेगा। पाठकवृन्द सम्पर्क करें :—

प्रबन्धक—अमर स्वामी प्रकाशन विभाग, 1058 विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद (उ० प्र०)।

मुद्रक : कला प्रिन्टर्स, दिल्ली-51